एक पुस्तक, संसार के अनगिनत आयाम

संसार की परिभाषा

विष्णु कुमार जोशीला

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Vishnu Kumar Joshila 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-739-5

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: October 2026

लेखक

विष्णु कुमार 'जोशीला'

प्रमाणीकरण

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि ‘संसार की परिभाषा’ पुस्तक मेरी स्वरचित एवं मौलिक रचना है।

लेखक

विष्णु कुमार ‘जोशीला’

प्राक्कथन

यह मेरी संसार को देखने की दृष्टि है, जिसे मैंने 'संसार की परिभाषा' पुस्तक में वर्णित किया है। संसार की इन परिभाषाओं से सभी सहमत हों, यह आवश्य नहीं है, किन्तु संसार का प्रत्येक व्यक्ति इन परिभाषाओं को पढ़कर एक नवीन अर्थ पायेगा जो उसे ज्ञान की उन गहराईयों में ले जायेगा, जहाँ उसे उपयोगिता के मोती मिलेंगे।

आशा करता हूँ कि आप इस पुस्तक को जरूर पढ़ेंगे और संसार का एक विशेष आदि अंत जानेंगे।

लेखक

विष्णु कुमार 'जोशीला'

अनुक्रम

संसार की परिभाषा 1
धर्म.....2
ज्ञान 3
विज्ञान.....4
परा ज्ञान.....5
ईश्वर.....6
परम तत्त्व 8
कामना 9
परिवार 10
समाज 12
प्रकृति 13
जड़ 14
चेतन.....15
व्यक्ति.....16
पशु, पक्षी, जीव और जंतु.....18
वनस्पति 19
प्रयोग.....20
योग.....21
एक विशेष विज्ञान, भाव विज्ञान.....22

शरीर और चिकित्सा 27
संगीत 30
सफलता सूत्र 31
असमंजस 33
एक मधुर वार्ता 34
भविष्यवाणी 38
उपसंहार 40

संसार की परिभाषा

विनय
हे प्रभु!
आप ही संसार हैं।
हे प्रभु!
संसार ही आप हैं।
हे प्रभु!
आपका आदि और अंत अदृश्य होने से किसी को भी पता नहीं है।
हे प्रभु !
आपका जो स्वरूप प्रकट है, उसकी व्याख्या संभव है।
हे प्रभु !
आपका प्रकट स्वरूप ही हमारा संसार है।
हे प्रभु !
आपके प्रकट स्वरूप की व्याख्या ही संसार की परिभाषा है।

संसार का अर्थ

साधारण शब्दों में संसार का अर्थ, हमारे सामने जो दृश्य और अदृश्य है वह सब कुछ संसार ही है। विशेष शब्दों में, यहाँ जो भी कुछ है; उसका परिचय ही संसार है।

संसार का महत्त्व

संसार एक ऐसा खूबसूरत मंच है, जिस पर जड़, चेतन और प्रकृति जैसे अद्‌भुत कलाकार; किसी अदृश्य शक्ति के निर्देशन में अनंत नाटक किये जा रहे हैं। हम भी उन नाटकों के कलाकार हैं।

धर्म

धर्म का अर्थ
धर्म का अर्थ है, जीवन के नियम।
धर्म का अर्थ है, प्रकृति के नियम।

धर्म का महत्त्व
धर्म हमारा पथ प्रदर्शक है।
धर्म हमारा पोषक है।
धर्म हमारा संरक्षक है।

धर्म और हम

हमारा जन्म प्रकृति के पांच तत्त्व क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर के संयोग से माता के गर्भ में हुआ है।

हममें इन पांचों तत्त्वों के मूल गुण धर्म प्रवाहित हैं। वह गुण धर्म ही हमारे मूल धर्म हैं। संक्षेप में प्रकृति के नियम ही हमारे पथ प्रदर्शक पोषक और संरक्षक हैं। वह हमारे मूल धर्म है। हमें उनका ही पालन करना चाहिए।

ज्ञान

ज्ञान का अर्थ - बोध।

ज्ञान का अर्थ - समझ।

ज्ञान का महत्त्व

ज्ञान प्रकाश है।

ज्ञान प्रभाव है।

ज्ञान चेतना है।

ज्ञान का विस्तार

ज्ञान सिर्फ़ ग्रंथों में ही नहीं है, वह तो सर्वत्र अंकित है।

हम जो एहसास कर रहे हैं, वह उसे ही पढ़ रहे हैं।

ज्ञान के प्रकार

ज्ञान के दो प्रकार हैं-

(1) बाहर का ज्ञान।

(2) भीतर का ज्ञान।

बाहर का ज्ञान भौतिक ज्ञान है और भीतर का ज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान है।

विज्ञान

विज्ञान का अर्थ

विज्ञान का अर्थ - विशेष ज्ञान।

विज्ञान का अर्थ - प्रयोग सिद्ध ज्ञान।

विज्ञान का महत्त्व

विज्ञान प्रकृति के रहस्यों को प्रकट करता है।

विज्ञान कारण और परिणाम को सिद्ध करता है।

विज्ञान भौतिक विकास का सर्वोत्तम साधन है।

विज्ञान के प्रकार

हम ज्ञान से विज्ञान की ओर बढ़े हैं। हमने बाहर और भीतर के ज्ञान से दो मुख्य विज्ञान पाये हैं-

(1) भौतिक विज्ञान, और

(2) भाव विज्ञान।

पता नहीं, प्रकृति में और कितने विज्ञान छुपे हैं। यदि हम ज्ञान के सहारे इसी प्रकार प्रकृति की ओर बढ़ते रहे, तो निश्चित रूप से उन्हें भी पा लेंगे।

परा ज्ञान

पराज्ञान का अर्थ

ज्ञान और विज्ञान की परिधि से बाहर के ज्ञान को पराज्ञान कहते हैं।

भाव से प्रकट ज्ञान को भी पराज्ञान कहते हैं।

पराज्ञान का आधार

पराज्ञान का आधार एक ऐसी शाश्वत चेतना है, जिसका भेद अभी तक नहीं जाना जा सका है।

उस शाश्वत चेतना को आध्यात्मवादी लोग ईश्वर और भौतिकवादी लोग परम तत्त्व की संज्ञा देते हैं।

पराज्ञान का विस्तार

आदि से अनादि तक की कल्पना का विस्तार ही पराज्ञान का विस्तार है।

ईश्वर

ईश्वर का अर्थ

आध्यात्मवादी लोगों ने अपने भाव विज्ञान से ईश्वर को इस प्रकार परिभाषित कर रखा है –

ईश्वर अद्वैत है।

वह शाश्वत है।

वह सर्व शक्तिमान है।

उसने अपना विस्तार द्वैत में कर प्रकृति माध्यम से आत्म सत्ता में प्रकट किया है जो सब में एक ही स्वरूप में स्थित है।

वह आत्म सत्ता उसका ही अंश है।

वह उसी प्रकार शाश्वत है, जैसे ईश्वर शाश्वत है। वह कभी नहीं मरती और उसे कोई मार भी नहीं सकता।

वह शाश्वत चेतन स्वरूप है और काल के साथ नवनूतन शरीर में प्रविष्ट होकर प्रकट होती है। वह जड़ तत्त्व में भी उसी प्रकार प्रभावी है, जिस प्रकार चेतन तत्त्व में प्रभावी होती है।

उसका रहस्य सिर्फ उसे (ईश्वर को) ही पता है और वह अपना रहस्य अपनी ही इच्छा से कभी भी, किसी भी जड़ चेतन पर प्रकट कर सबको आश्चर्य चकित कर सकती है।

वह स्वयं से स्वयं में व्यवहार करती है। विश्व के मनीषियों ने इन्हीं आध्यात्मवादी लोगों की इस कल्पना या इस भावना या इस सत्य को ज्ञान विज्ञान और पराज्ञान की कसौटी पर रखकर अनगिनत शास्त्रों को रच डाला।

सम्पूर्ण मानव जगत उनसे प्रभावित है, किन्तु - ईश्वर का एक मात्र अपरिवर्तित सत्य क्या है; इस पर जन्म-मृत्यु के मध्य अब भी मतभेद प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है।

परम तत्त्व

परम तत्त्व का अर्थ

भौतिकवादी लोगों ने अपने भौतिक विज्ञान के आधार पर परम तत्त्व की व्याख्या कुछ इस प्रकार की है-

परम तत्त्व एक महाशक्ति पुंज है।

वह ब्रह्माण्ड में स्थित है।

वह बहुत प्रभावशाली है।

वह स्वमेव प्रकृति का सृजन, पोषण और विनाश करता है।

वह इस प्रक्रिया को पुनः पुनः नये नये रूपों में दोहराता रहता है।

वह परम तत्त्व शाश्वत है।

इसके अस्तित्व और स्वरूप को ठीक-ठीक बता पाना कठिन है।

इसके प्रभाव को देखा और समझा जा सकता है।

यह हमारे लिए बहुत उपयोगी है।

इससे हम अनंत शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं। हमारे अब तक के आविष्कार इसके प्रमाण हैं।

यह हमारे लिए शोध का विषय है।

इसे हम कल्पनीय तत्त्व नहीं मान सकते।

यह एक भौतिक तत्त्व है और सत्य है।

यह परम तत्त्व है।

कामना

कामना का अर्थ

रिक्तता की पूर्ति का भाव ही कामना है।

जीवंत में इच्छा भाव ही कामना है।

जड़ में संयोग आकर्षण ही कामना है।

संक्षेप में, संयोग में छुपा कारण या भाव ही कामना का द्योतक है।

कामना का महत्त्व

प्रकृति के पांच तत्त्व क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर के संयोग आकर्षण भाव ने सृष्टि को जन्म दिया है।

सृष्टि का मुख्य नायक मानव भी इसी भाव से अवतरित हुआ है।

सृष्टि के अन्य जीव भी इसी भाव के परिणाम हैं। सृष्टि का सम्पूर्ण विस्तार कामना पर ही आधारित है।

इस प्रकार संसार में कामना का बहुत अधिक महत्त्व है।

कामना के प्रकार

कामना के अनंत प्रकार हैं।

एक कामना से अनेक कामनाएं और अनेक कामनाओं से अनंत कामनाएं स्फुटित होती हैं।

सृष्टि का जड़ चेतन इसी प्रक्रिया में स्वमेव क्रियाशील है।

आध्यात्मवादी लोग इसे ईश्वर की लीला और भौतिकवादी लोग इसे परमतत्त्व की क्रिया कहते हैं।

परिवार

परिवार का अर्थ

एक से दो व्यक्तियों का समूह ही परिवार है।

एक से दो व्यक्तियों का संबंध ही परिवार है।

परिवार का महत्त्व

संसार में परिवार व्यवस्था व्यक्तियों के अच्छे विकास की व्यवस्था है।

परिवार व्यवस्था ने ही संसार को एक अच्छे संगठन की व्यवस्था दी है।

संसार में यदि परिवार व्यवस्था न होती तो व्यक्ति अपने एकाकीपन की कुंठा में जीता।

यदि कोई व्यक्ति जीवन का भरपूर आनंद लेना चाहता है तो उसे परिवार व्यवस्था को अपनाना चाहिए।

परिवार का विस्तार

परिवार के निर्माण का मुख्य आधार प्रेम और सहयोग है। एक से दो व्यक्तियों का प्रेम और सहयोग परिवार को कितना ही विस्तृत कर सकता है।

परिवार के सदस्य

परिवार के सदस्य दो प्रकार के हो सकते हैं-

(1) एक तो, माता-पिता से उत्पन्न संतति सदस्य

(2) और दूसरे, प्रेम और सहयोग के वशीभूत बने परिवार के अंग या सदस्य।

दोनों प्रकार के सदस्य परिवार की शोभा और शक्ति होते हैं।

परिवार के सदस्यों के अधिकार और कर्त्तव्य

परिवार व्यवस्था कोई राजकीय व्यवस्था नहीं है, जो उसके सदस्यों को संवैधानिक अधिकार और कर्त्तव्य दे। वह तो एक प्रेम और सहयोग पर आधारित व्यवस्था है, जिसमें नैतिकता के आधार पर सबके अधिकार और कर्त्तव्य स्वमेव निर्मित होते हैं। वह अपने अधिकार और कर्त्तव्यों का निर्वहन जितनी अधिक ईमानदारी से करते हैं, उतनी ही अधिक गति से परिवार का विस्तार और विकास होता है।

समाज

समाज का अर्थ

साधारण शब्दों में, समाज का अर्थ व्यक्तियों के एक ऐसे समूह से है जो अपनी परम्पराओं के कारण संसार में पृथक से जाना जाता है।

विशेष शब्दों में, समाज का अर्थ व्यक्तियों के एक ऐसे समूह से है जो अपने गाँव, शहर या देश के नाम से संसार में पृथक से जाना जाता है।

समाज का महत्त्व

समाज संसार की सुन्दरता है।

समाज संसार की एक ऐसी शक्तिशाली संस्था है, जिसका महत्त्व उसके व्यक्तियों से है।

समाज के कार्य

व्यक्तियों के कार्य ही समाज के कार्य हैं।

प्रकृति

प्रकृति का अर्थ और महत्त्व

प्रकृति का अर्थ और महत्त्व बहुत विस्तृत है। प्रकृति में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की कल्पना की गई है। क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर सब उसके ही अंग है। जड़-चेतन सब उसके ही पौधे हैं। उसके गुण-धर्म सब में समाहित हैं। उसके आदि का स्त्रोत किसी को पता नहीं है। उसके अंत का भेद अभी तक रहस्य है। मनुष्य ने बस इतना जाना है कि वह उसके लिए आवश्यक और हितकारी है।

जड़

जड़ का अर्थ

साधारण शब्दों में, जड़ एक ऐसा तत्त्व है जो स्वतः चल फिर नहीं सकता।

विशेष शब्दों में, सभी भौतिक पदार्थ जड़ हैं।

जड़ का महत्त्व

यदि संसार में जड़ न हो तो नव-निर्माण संभव ही नहीं है।

चेतन

चेतन का अर्थ

साधारण शब्दों में, जो स्वतः चल-फिर सकता है, वह चेतन है।

विशेष शब्दों में, जिसमें चेतना है, अर्थात् प्राण है, वह चेतन है।

चेतन का महत्त्व

चेतन संसार का भोक्ता है।

यदि चेतन न हो तो संसार का महत्त्व ही क्या है।

व्यक्ति

व्यक्ति का अर्थ

साधारण शब्दो में, व्यक्ति से अर्थ मनुष्य से है।

विशेष शब्दों में, व्यक्ति से अर्थ हम सबसे है जो इस संसार में रहते हैं।

व्यक्ति का महत्त्व

व्यक्ति संसार का जीवन है।

व्यक्ति संसार की शोभा है।

व्यक्ति से संसार का महत्त्व है।

व्यक्ति नहीं तो इस संसार में ज्ञान, विज्ञान और पराज्ञान कुछ भी नहीं है।

व्यक्ति और कामना

व्यक्ति और कामना का गहरा संबंध है। जहाँ व्यक्ति है, वहाँ कामना है। वैसे तो व्यक्ति की अनंत कामनाएं हैं, किन्तु दो कामनाएं विशेष हैं-

(1) एक तो, वह जीवन भर भय मुक्त रहना चाहता है।

(2) और दूसरे, वह संसार के सब सुख पाना चाहता है।

व्यक्ति और धर्म

संसार के विभिन्न व्यक्ति, समूह और समाजों ने अपने-अपने आचरणों के आधार पर भिन्न-भिन्न धर्म स्थापित कर लिए हैं। वह धर्म उनकी मान्यताओं के आधार पर हैं। उन धर्मों का पालन सब करें, यह आवश्यक नहीं है। इससे स्पष्ट है कि वह धर्म सर्वमान्य धर्म नहीं है। धर्म वही है जो सर्वमान्य हो। उसका कोई विकल्प भी न हो। उसके सिद्धांत या गुण या मान्यताएं सब स्थानों पर

और सब व्यक्तियों पर एक जैसा प्रभाव डालते हो। ऐसी धर्म सत्ता सिर्फ एक है और वह है प्रकृति। प्रकृति के नियम शाश्वत हैं। प्रकृति के नियम अपरिवर्तनीय हैं। सब पर एक जैसा प्रभाव डालते हैं। सब पर एक जैसे लागू होते हैं।

हम सबका जन्म प्रकृति के पांच तत्त्वों से हुआ है। हम सब में प्रकृति के मूल गुण नियम प्रवाहित हैं। हम उनसे अलग नहीं हो सकते। उसके नियम ही हमारे धर्म सूचक हैं।

हमें, प्रकृति के नियमों का पालन करना चाहिए। यही हमारा मूल धर्म है।

व्यक्ति और परिवार

जब एक से दो व्यक्तियों का संबंध बनता है तो वह परिवार बन जाता है। फिर वह व्यक्ति स्वेच्छाचारिता नहीं अपना सकता। उसे परिवार की मर्यादा में रहना होता है। परिवार की मर्यादा ही उसका बल है।

व्यक्ति और समाज

जब किसी एक विचार धारा पर चलने वाले अनेक लोग, एक घोषित या अघोषित संगठन में बदल जाते हैं, तब वह एक समाज कहलाने लगते हैं। समाज एक बहुत बड़ी संस्था है। उसके अपने नियम अधिकार और कर्त्तव्य है। उनका निर्वाह जब तक उसके सदस्य करते हैं, तब तक वह बढ़ता है - अन्यथा ध्वस्त हो जाता हैं। व्यक्ति और समाज का यही संबंध है।

व्यक्ति और संसार

संसार बहुत बड़ा है। संसार में व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र सभी आ जाते हैं।

व्यक्ति का संसार से बस इतना संबंध है कि वह उसका अंग है। उसे संसार से व्यवहार करने का पूर्ण अधिकार है।

पशु, पक्षी, जीव और जंतु

पशु पक्षियों का महत्त्व

प्रकृति के पांच तत्त्व क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर से न केवल मनुष्य का जन्म हुआ है, वरन् पशु, पक्षी और जीव जंतुओं का भी जन्म हुआ है। वह भी संसार का हिस्सा हैं। उनका भी संसार में महत्त्व है। वह भी संसार की शोभा हैं। वह भी संसार के विकास में अपना योगदान देते हैं। इस नाते संसार पर उनका भी अधिकार है। वह भी निर्भीक और सुरक्षित रहना चाहते हैं।

पशु, पक्षी, जीव, जंतु और व्यक्ति

पशु, पक्षी, जीव, जंतु और मनुष्यों का जन्म एक ही प्रकृति से हुआ है। अतः उनका प्रकृति कारण से घनिष्ठ संबंध है।

मनुष्य प्रकृति का मुख्य नायक है। वह बुद्धि गुण के कारण पूर्ण हैं। अतः उसका उत्तरदायित्व है कि वह संसार के पशु, पक्षी, जीव और जंतुओं का पोषण और संरक्षण सुनिश्चित करें।

जीव अध्ययन का परिणाम

मनुष्य ने संसार में पशु, पक्षी, जीव और जंतुओ को देखा। उनका अध्ययन किया। उनका महत्त्व समझा। फिर उनके पोषण और संरक्षण की दिशा में काम किया।

आज जीव और मनुष्य के बीच घनिष्ठ संबंध है। वह दोनों प्रकृति के अंग होकर संसार की शोभा हैं।

वनस्पति

प्रकृति और वनस्पति

संसार में प्रकृति ने न केवल मनुष्य, पशु, पक्षी, जीव और जंतु उत्पन्न किये हैं, वरन् वनस्पति को भी पैदा किया है। प्रकृति से वनस्पति का संबंध ठीक वैसा है, जैसा प्राण और शरीर का होता है।

वनस्पति और चेतना

वनस्पति में भी एक विशेष प्रकार की चेतना प्रकट होती है। इससे लगता है कि वह भी एक चैतन्य प्राणी है।

वनस्पति विज्ञान

ज्ञान अनंत है। मनुष्य जिज्ञासु है। वह प्रकृति के प्रत्येक रहस्य को जानना चाहता है। जब उसे लगा कि वनस्पति में भी चेतना है तो वह उसकी खोज में लग गया। उसने वनस्पति के जन्म और विकास को समझा। उसका यह प्रयास; हम सबके सामने वनस्पति विज्ञान के रूप में है।

प्रयोग

प्रयोग का अर्थ

साधारण शब्दों में, कोई भी चीज क्या है; उसे प्रत्यक्ष में देखने या जानने हेतु किया गया प्रयास ही प्रयोग है।

विशेष शब्दों में, तथ्यों या तत्त्वों के आधार पर किसी चीज की सत्यता प्रमाणित करने हेतु किया गया प्रयास ही प्रयोग है।

प्रयोग का महत्त्व

प्रयोग किसी भी चीज के रहस्यों को प्रकट करने का एक माध्यम है।

प्रयोग एक ऐसा प्रयास है, जिससे प्रत्येक सत्य को जाना जा सकता है।

प्रयोग से ही आगे बढ़ने का सच्चा मार्ग प्रशस्त होता है।

प्रयोग के प्रकार

प्रयोग के दो प्रकार हैं-

(1) आध्यात्मिक प्रयोग जो व्यक्तियों की आस्था पर आधारित हैं।

(2) भौतिक प्रयोग जो तथ्यों और तत्त्वों की जाँच पर आधारित हैं।

प्रयोग और विकास

प्रयोग; व्यक्ति के आगे बढ़ने का ठोस मार्ग प्रशस्त करता है, इसलिए; प्रयोग और विकास का अनूठा संबंध है।

संसार के अब तक के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, भौगोलिक और सभी प्रकार के विकास प्रयोगों के फलस्वरूप ही हुए हैं। वह सब प्रयोग सिद्ध विकास हैं; इसलिए अब तक संसार की विकास गति अविरत है।

योग

योग का अर्थ

साधारण शब्दों में, योग का अर्थ 'जोड़' से है।

विशेष शब्दों में, योग का अर्थ दो विचार धाराओं से वर्गीकृत हैं-

(1) आध्यात्मिक दृष्टि से योग का अर्थ एक विशिष्ट और अभीष्ठ साधना से है जो अपनी दस इन्द्रि और एक मन को नियंत्रित कर एकाग्र चित्र से की जाती है। आध्यात्मिक लोग अपनी ऐसी साधना को योग क्रिया कहते हैं।

(2) भौतिक दृष्टि से योग का अर्थ एक ऐसी शारीरिक व्यायाम क्रिया से है, जिससे व्यक्ति अपने शरीर में स्फूर्ति और स्वस्थ्यता लाता है। भौतिकवादी लोग अपनी ऐसी व्यायाम क्रिया को योग क्रिया कहते हैं।

योग का महत्त्व

आध्यात्मिक दृष्टि से योग व्यक्ति की आस्था और भाव, विज्ञान के अध्ययन और प्रयोग का अच्छा माध्यम है। भौतिक दृष्टि से योग व्यक्ति के शरीर विकास और अवयव विज्ञान के अध्ययन और प्रयोग का अच्छा माध्यम है।

एक विशेष विज्ञान, भाव विज्ञान

भाव विज्ञान

हम ज्ञान से विज्ञान की ओर बढ़े हैं। हमने विज्ञान के सहयोग से अनंत विकासों को प्राप्त किया है। हमारे वह सब विकास भौतिक आधारों पर आधारित हैं। हमारे उन विकासों में या चमत्कारों में विज्ञान की तथ्यात्मक और तत्त्वात्मक सच्चाई है। वह मात्र कपोल कल्पना पर आधारित नहीं हैं। इसलिए उन विकास या चमत्कारों का भौतिक विज्ञान हम सबके सामने सिर उठाकर अस्तित्व में है।

किन्तु, दुनिया में प्राचीन काल से एक ऐसा भी विज्ञान प्रचलित है, जिसका आधार भौतिक या तथ्यात्मक नहीं है। वह मात्र व्यक्ति के भाव पर आधारित है। उसे आस्थावान लोग भाव-विज्ञान कहते हैं। उनका कहना है कि दुनिया में भाव विज्ञान से बड़ा कोई विज्ञान नहीं है। भाव विज्ञान से बिना किसी आधार के एक ही स्थान पर बैठकर संसार के दुर्लभ से दुर्लभ कार्य किये जा सकते हैं। भाव विज्ञान व्यक्ति के मन में भाव आते ही भाव के अनुरूप परिणाम देता है। भाव विज्ञान इतना प्रबल विज्ञान है कि वह एक क्षण में सृष्टि के समस्त रहस्यों को प्रकट कर सकता है। भाव विज्ञान ईश्वरीय विज्ञान है। भाव विज्ञान का स्वरूप आत्मा है। भाव विज्ञान की क्रिया भाव है और भाव विज्ञान का परिणाम स्वयं ईश्वर है।

भाव विज्ञान का अर्थ

साधारण शब्दों में, भाव पर आधारित विज्ञान को ही भाव विज्ञान कहते हैं।

विशेष शब्दों में, भाव की तरंगों के प्रयोग से जो अभीष्ठ फल प्रकट कर दे, वह भाव विज्ञान है।

भाव का अर्थ

भाव विज्ञान जानने के लिए भाव का अर्थ जानना बड़ा जरूरी है।

संसार में प्रकृति और जीव की अनंत क्रियाएं हैं। उन क्रियाओं को देखकर या सुनकर या पढ़कर, या आभास कर जब हमारे हृदय या मस्तिष्क में कोई विचार जागता है, तब हम उस पर कुछ सोचते हैं। हमारा यह सोचना ही, हमारा भाव है। भाव हमारे मस्तिष्क में हमेशा उठते रहते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि हम हमेशा प्रकृति की क्रियाओं के प्रभाव में है। हमारा जन्म ही प्रकृति से हुआ है। अतः उसकी क्रियाओं से प्रभावित होना और उससे भाव ओत-प्रोत होना, हमारा स्वभाविक गुण है। इस गुण को ही भाव कहते हैं।

भाव विज्ञान का भाव

जब कोई व्यक्ति अपने किसी अभीष्ठ भाव के अनुकूल फल चाहता है और उस फल को पाने के लिए अपने भाव पर भाव विज्ञान के नियमानुसार प्रयोग करता है; तब उसका यह भाव, भाव विज्ञान की भाव विषय वस्तु होता है। यही भाव, भाव विज्ञान के प्रयोग का भाव है। इस भाव पर ही भाव विज्ञान के प्रयोग किये जाते हैं। भाव विज्ञान के प्रयोग की सामग्री सिर्फ़ व्यक्ति का भाव है जो न तो तत्त्वात्मक है और न ही भौतिक है। वह मात्र विचार है।

भाव विज्ञान की विषय वस्तु

भाव विज्ञान की विषय वस्तु मात्र व्यक्ति के भाव है। संसार में अनेक व्यक्ति हैं और उनकी अनंत भावनाएं है। वह सब, भाव विज्ञान की विषय वस्तु हैं।

भाव विज्ञान का प्रयोग क्षेत्र

भाव विज्ञान के प्रयोग की सामग्री भाव है। अनेक व्यक्तियों की अनंत भावनाएं हैं। यदि सब भावनाओं पर प्रयोग किये जाये तो वह अनंत ही होंगे। इससे यह स्पष्ट है कि भाव विज्ञान का प्रयोग क्षेत्र बहुत विस्तृत है।

भाव विज्ञान की प्रयोगशाला

व्यक्ति का शरीर ही भाव विज्ञान की प्रयोगशाला है। यदि कोई व्यक्ति अपने भाव के अभीष्ठ फल को पाना चाहता है, तो उसे स्वयं के शरीर पर ही भाव बल के प्रयोग करने होंगे। तब ही वह भाव विज्ञान से कोई चमत्कार कर पायेगा।

भाव के प्रयोग का ढंग

भाव विज्ञान आस्था पर आधारित विज्ञान है। उस पर आस्था रखने वाले मनीषियों ने उसके अनुसार भाव फल पाने का ढंग कुछ इस प्रकार बतलाया है। वह कहते हैं कि भाव सिद्धि भाव प्रयोग से संभव है। भाव प्रयोग के लिए सर्वप्रथम प्राणायाम क्रिया करनी होती है।

प्राणायाम क्रिया

प्राणायाम क्रिया अपनी श्वास की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में सबसे पहले अपनी श्वास को अपने शरीर के अंदर खींचा जाता है, फिर कुछ क्षण रोका जाता है और फिर बाहर निकाल दिया जाता है। जब हम अपनी श्वास को अपने अंदर खींचते हैं, तब इस प्रक्रिया को पूरक कहते हैं और जब हम इस श्वास को अपने अंदर कुछ समय रोकते हैं, तब इस प्रक्रिया को कुंभक कहते हैं और जब हम इस श्वास को अपने शरीर से बाहर छोड़ते हैं, तब इस प्रक्रिया को रेचक कहते हैं।

श्वास की पूरक, कुंभक और रेचक प्रक्रिया ही प्राणायाम क्रिया है। इस क्रिया से हमारी दस इन्द्री और एक मन शांत और स्थिर अवस्था को पाते हैं। तब हमारा अभीष्ठ भाव का चिंतन उपलब्धि स्वरूप बीज में परिणित होता है। जैसे-जैसे उस बीज को भाव गहनता सींचती है, वैसे वैसे वह एक विशेष शक्ति का रूप लेता है और भाव के अनुकूल फल प्रकट कर देता है। ऐसा उनका विश्वास है।

भाव विज्ञान के प्रकार

भाव विज्ञान के आस्था मनीषी भाव विज्ञान के मुख्य दो पूरक विज्ञान बताते हैं-

(1) स्वर विज्ञान अर्थात् ध्वनि विज्ञान।

(2) अक्षर विज्ञान अर्थात् स्वर पहचान का विज्ञान।

भाव की गहनता, स्वर और अक्षर उच्चारण से एक रूप होने पर अभीष्ठ फल में परिणित होती है। इस एकरूपता के बिना भाव का अभीष्ठ फल प्रकट नहीं हो सकता।

भाव विज्ञान का विस्तार

यदि आपको भाव विज्ञान के विस्तार के दर्शन करने हैं तो आप संसार के तंत्र-मंत्र साहित्य का अध्ययन अवश्य करें। आपको ज्ञात हो जायेगा कि आध्यात्मिक आस्था के कारण यह विज्ञान किस तरह संसार के लोगों के मस्तिष्क में अपनी जगह बनाये हुए है। इस के दो विराट उदाहरण मैं आपके समक्ष रख रहा हूँ।

(1) अक्षर की महिमा

आध्यात्मवादी लोग अक्षर को ब्रह्म या ईश्वर कहते हैं। वह अक्षर साधनाएं करते हैं। इन साधनाओं में 'ॐ' अक्षर की साधना करोड़ों लोग करते हैं। उनका कहना है कि 'ॐ' अक्षर में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। यदि कोई व्यक्ति 'ॐ' अक्षर का उच्चारण भाव से कर ले तो वह संसार की समस्त शक्तियों का स्वामी बन जायेगा।

(2) कुण्डलिनि शक्ति

आध्यात्मवादी लोग शरीर में छुपी एक ऐसी शक्ति के जागरण की बात कहते हैं, जो परमाणु शक्तियों से भी ज्यादा बलवान है। यदि उसे जाग्रत कर लिया

जाय तो व्यक्ति ब्रह्माण्ड में छुपे सारे रहस्यों को जान सकता है। वह इस शक्ति से समय की गति को पहचान सकता है। यहाँ तक कि वह इस शक्ति से प्रकृति के नियमों को भी बदल सकता है। वह इस शक्ति को कुण्डलिनी शक्ति कहते हैं।

वह यह कहते हैं कि इस शक्ति को 'ॐ हूँ ऐं ह्रीं श्रीं' इन पांच अक्षरों के उच्चारण से जाग्रत किया जा सकता है। जब हम विशुद्ध भाव से इन अक्षरों का उच्चारण करते हैं, तब हमारे शरीर में ऊर्जा उत्सर्जन के सभी स्त्रोत (रास्ते) खुल जाते हैं, और हमारी कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है। उससे करोडों सूर्यों का प्रकाश निकलता है, जिसकी रोशनी में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के रहस्य स्पष्ट दिखाई देते हैं।

भाव विज्ञान की सत्यता

प्राचीन काल से आज तक अनेक व्यक्ति भाव पर आधारित प्रयोग करते आ रहे हैं। उन्हें किसी के विरोध या आलोचना की कोई परवाह नहीं है। उनका यह विज्ञान उनकी आस्था का केन्द्र हैं। उनके लिए यह सत्य और उपयोगी है।

शरीर और चिकित्सा

जीवन

इस संसार में माता के गर्भ से जो भी जीवन अवतरित होता है, वह अद्वितीय और अतुलनीय है।

शरीर और जीवन

शरीर का संबंध जीवन से है और जीवन का संबंध शरीर से है। यह दोनों अभिन्न हैं।

शरीर का महत्त्व

जीवित शरीर संसार की शोभा है।

जीवित शरीर संसार का बल है।

जीवित शरीर संसार का अमूल्य धन है।

जीवन का महत्त्व

शरीर यदि स्वस्थ्य है, तब ही जीवन का महत्त्व है। स्वस्थ्य शरीर जीवन की महक है। इसीलिए व्यक्ति को अपने जीवन में अपने शरीर के प्रति हमेशा सचेत रहना चाहिए। उसे अपने जीवन में ऐसी कोई भूल नहीं करना चाहिए, जिससे उसका स्वास्थ्य खराब होता हो।

शरीर के प्रति कर्त्तव्य

व्यक्ति का स्वयं के शरीर के प्रति यह एक परम कर्त्तव्य है कि वह उसे निरोगी रखे। इसके लिए उसे अपने जीवन में निम्न कार्य करते रहना चाहिए –

(1) व्यायाम

प्रतिदिन व्यायाम करने से मनुष्य का शरीर स्वस्थ्य रहता है। व्यायाम का जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है। व्यक्ति को अपने शरीर की स्वस्थ्यता और सुड़ौलता के लिए व्यायाम करते रहना चाहिए।

(2) संतुलित आहार

आहार शरीर की परम आवश्यकता है। आहार के बिना शरीर नहीं चल सकता है। आहार व्यक्ति का पोषण है, जिससे वह पुष्ट रहता है। अतः व्यक्ति को जीवन भर संतुलित आहार लेना चाहिए। संतुलित आहार तप जैसा है जो मनुष्य के शरीर को कांति प्रदान करता है।

(3) विश्राम

शरीर की स्वस्थ्यता के लिए पर्याप्त विश्राम भी आवश्यक है। व्यक्ति को अपने कार्य के साथ-साथ पर्याप्त विश्राम भी करना चाहिए। इससे उसका शरीर पुनः पुनः स्फूर्तिदायक बनता है और वह अपने जीवन को सुखमय भोगता है।

शरीर, रोग और चिकित्सा

व्यक्ति का अपने शरीर के प्रति प्रथम कर्त्तव्य है कि वह अपने शरीर को स्वस्थ्य रखें, तब ही वह जीवन का सच्चा आनंद उठा सकता है।

यदि किसी कारण बस उसका शरीर रोगी होता है, तो उसे तुरंत चिकित्सा लेनी चाहिए।

चिकित्सा सुधार है, समस्या नहीं है। चिकित्सा को समस्या समझ कर निराश नहीं होना चाहिए। चिकित्सा तो एक ऐसा अनिवार्य कार्य है, जो शरीर के रोगी होने पर किया जाता है। उसे प्राथमिकता और उत्साह से तुरंत किया जाना चाहिए, जिससे व्यक्ति स्वस्थ्य होकर पुनः अपनी जीवन यात्रा पर चल सके।

चिकित्सक एक विशिष्ट व्यक्तित्व

संसार में चिकित्सक एक विशिष्ट व्यक्तित्व है। वह रोगी का इलाज करके उसे पुनः जीवनदान देता है। उसका प्रयास रोगी की खुशी है। इसलिए भावुकता बस लोग उसे दूसरा भगवान कहते हैं।

संगीत

संगीत

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक नाद है। उस नाद में एक स्वर है। वह स्वर ही संगीत है। वह बहुत मधुर है। वह बहुत प्रभावी हैं। ब्रह्माण्ड की चेतना में जो स्पंदन है, वह उसी का प्रभाव है।

संगीत कला का महत्त्व

शास्त्रों में चौंसठ कलाएं वर्णित हैं, जैसे - गायन कला, वादन कला, नृत्य कला आदि किन्तु उनमें संगीत कला बहुत महत्वपूर्ण है। संगीत कला चित की मोहिनी है, इसलिए उसका महत्त्व अन्य कलाओं से अधिक है।

संगीत और संसार

संसार ब्रह्माण्ड में हैं, इसलिए ब्रह्माण्ड नाद का स्वर संसार का स्वर है। उस स्वर से संसार में स्पंदन है। इसलिए संगीत और संसार का घनिष्ठ संबंध है। वह अभिन्न हैं।

सफलता सूत्र

मनुष्य की इच्छा

संसार का प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसके जीवन में हमेशा सुख-ही-सुख आयें; दुःख बिल्कुल न आयें, किन्तु ऐसा होता नहीं है। जीवन में सुख-दुःख आते ही हैं। उनका चोली दामन का संबंध है। उनको एक दूसरे से पृथक करना कठिन है। वह जीवन के साथी हैं। बुद्धिमान व्यक्ति वह है, जो उनका सहर्ष सामना करता है और अपने जीवन लक्ष्य की ओर अविरत बढता रहता है।

जीवन का लक्ष्य

जीवन स्वस्थ्य रहे। जीवन श्रेष्ठ रहे। जीवन सबके काम आये। यही तो 'मनुष्य जीवन' का लक्ष्य है।

सफलता के सूत्र

मनुष्य जीवन की सफलता के कुछ सूत्र हैं। इन पर चलने से व्यक्ति का जीवन निखरता है और वह महान बनता है।

(1) पुरूषार्थ

जीवन में मात्र कल्पना करने से कुछ नहीं होगा। कल्पना के अनुरूप कार्य करने से सब कुछ होगा। इसलिए व्यक्ति को अपने जीवन में पुरूषार्थ अवश्य करना चाहिए। जीवन की सफलता पुरूषार्थ पर बहुत कुछ निर्भर है।

(2) धैर्य

कोई भी बीज तुरंत वृक्ष बनकर फल नहीं देता है। उस के वृक्ष बनने और फल देने में कुछ समय लगता है। इसलिए व्यक्ति को अपने जीवन में किये कार्यों से तुरंत सब कुछ पा लेने की कल्पना नहीं करनी चाहिए। धैर्य से काम लेना चाहिए

और समय पर सब कुछ पा लेना चाहिए। जीवन में धैर्य गुण बड़ी से बड़ी सफलता का कारक है।

(3) सबके साथ

सबके साथ रहना, जीवन का बहुत बडा सुख है। व्यक्ति की कोशिश होनी चाहिए कि वह किसी से पृथक न हो। सबसे जुडा रहे और सबको जोडे रहे।

असमंजस

बातें

संसार में कुछ ऐसी बातें चर्चा में हैं, जो जीवन को ऐसे प्रभावित करती हैं, जैसे मृगमारीछिका। विश्वास करें या न करें-

(1) यह जगत मिथ्या है।

(2) तुम शरीर नहीं, आत्मा हो।

(3) शरीर मरता है, आत्मा कभी नहीं मरती है।

(4) जीवन का लक्ष्य मोक्ष है।

(5) मोक्ष ही ईश्वर से मिलन है।

एक मधुर वार्ता

मधुर वार्ता

कल हम अकेले थे। आज हमारी शादी हो गई है। अब हम पति-पत्नी हैं। अब हम एक परिवार है। अब हमें अपने परिवार की प्राथमिकताएं निश्चित करनी चाहिए, जिससे हम एक सफल जीवन जी सकें।

संसार एक सागर

संसार एक सागर है। इसमें अमृत और विष, सुख और दुःख, फूल और कांटे, सम्पत्ति और विपत्ति, खुशी और गम, संयोग और वियोग सब कुछ है। हम इस सागर के प्रभाव में हैं। हमें इसके प्रभाव में रहकर अपने प्रभाव को सुरक्षित रखना है, जिससे हमारा जीवन एक सरल और सहज रह सके।

एक सरल और सहज जीवन

एक सरल और सहज जीवन अर्थात् एक छोटी सी नदी, जो सागर तक नहीं जाती है, बल्कि अन्य नदियों में मिल जाती है। उसके मिलने का आधार समझदारी या ज्ञान होता है। हम भी उसकी ही तरह समझदारी से काम लेंगे और मीठे कहलायेंगे। एक सरल और सहज जीवन जियेंगे।

ज्ञान या समझदारी का महत्त्व

ज्ञान प्रकाश है। ज्ञान प्रभाव है। ज्ञान बल है। ज्ञान के सहारे जीवन में सब कुछ किया जा सकता है। जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान सिर्फ़ ग्रंथों में ही अंकित नहीं है, वह तो सर्वत्र अंकित है। हम जो एहसास कर रहे हैं, वह उसे ही पढ रहे हैं। हम उस की मदद से अपने जीवन लक्ष्य को पायेंगे।

ज्ञान का पहला पाठ

संसार में सिर्फ़ आप अकेले महत्त्वपूर्ण नहीं है। सृष्टि के सब अंग महत्त्वपूर्ण हैं। श्रेष्ठ व्यक्ति वह है, जो सबको महत्त्व देकर अपना महत्त्व बनाये। हम संसार के प्रत्येक व्यक्ति का आदर कर आदरणीय बनने का प्रयास करेंगे, जिससे हमारा जीवन एक सूर्य की भाँति प्रकाशित हो सके।

संतुलित जीवन

स्वतंत्रता सब चाहते हैं, परतंत्रता कोई नहीं चाहता है, किन्तु स्वतंत्रता नियंत्रण की परतंत्रता चाहती है, क्योंकि उसके बिना संतुलन संभव नहीं है।

संतुलित जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है। हम इसे पाने के लिए हमेशा कटिबद्ध रहेंगे और संतुलन के लिए नियंत्रण को महत्त्व देंगे।

अधिकार और कर्त्तव्य

जीवन में आनंद तब ही आता है, जब व्यक्ति अपने अधिकार और कर्त्तव्यों के बीच प्रतियोगिता न आने दे।

प्रतियोगिता विकास में श्रेष्ठ है। प्रतियोगिता सहयोग में श्रेष्ठ है। प्रतियोगिता प्रेम में श्रेष्ठ है।

हम अपने जीवन में प्रतियोगिता को यथास्थान रखकर अपने अधिकार और कर्त्तव्यों के बीच द्वन्द नहीं होने देंगे। हम इस वचन का पालन कर अपने परिवार में सौहार्द को विकसित करेंगे।

संबंधों की मधुरता

परिवार में संबंधों की मधुरता ही सौहार्द्र को विकसित करती है। मधुरता ही जीवन का अमृत है। हम अपने जीवन को मधुरता से जीवंत रखेंगे।

घर की शोभा

घर की शोभा घर के सदस्यों से है। घर की शोभा, घर के साधनों से भी है, किन्तु घर की शोभा, घर की स्वच्छता से ज्यादा ही है। हम मिलकर अपने घर को सुन्दर रखेंगे, क्योंकि हमारा घर; हमारी खुशी है।

धन और पुरूषार्थ

धन साधन है, साध्य नहीं है; फिर भी जीवन में उसका बहुत महत्त्व है। धन के बिना परिवार का पोषण नहीं हो सकता। धन के बिना जीवन की आवश्यकताएं पूरी नहीं हो सकती। जीवन में पर्याप्त धन का होना अत्यन्त आवश्यक है।

जीवन में पुरूषार्थ के बिना धन नहीं आ सकता। अतः व्यक्ति को अपने जीवन में पुरूषार्थ कर धन का उपार्जन अवश्य ही करना चाहिए और उसका उपभोग विवेकपूर्ण करना चाहिए। तब ही उसका जीवन सुखी हो सकता है।

हम दोनों मिलकर अपने जीवन में धन और पुरूषार्थ के बीच ताल मेल बैठायेंगे और अपने जीवन को सम्पन्न बनायेंगे।

जीवन में शांति

जीवन में अशांति सबसे बड़ा विचलन है। जो इस विचलन से बचता है, वह अपने जीवन में आनंद को सजो लेता है।

जीवन में शांति पाने के लिए न केवल भौतिक प्रयास पर्याप्त होते हैं, वरन् आध्यात्मिक प्रयासों की भी आवश्यकता होती है।

व्यक्ति को अपने जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक सभी प्रयासों को सत्यता के आधार पर महत्त्व देना चाहिए और अशांति से छुटकारा पाना चाहिए।

शांति के बिना जीवन अस्थिर है।

हम इसका ध्यान रखेंगे और हर संभव प्रयास से अपने जीवन में शांति लायेंगे। अपने परिवार को कभी अशांत नहीं रहने देंगे। हम और हमारे परिवार की शांति ही हमारी प्रतिष्ठा होगी।

भविष्यवाणी

भविष्यवाणी

समय की गति पहचान कर भविष्य की संभावित घटनाओं का विश्लेषण करना ही भविष्य वाणी करना है। कुछ लोग संभावना को भविष्यवाणी कहते हैं। ऐसे ही मैं भी कुछ भविष्य वाणियाँ कर रहा हूँ-

(1) भविष्य में मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेगा।

(2) भविष्य में मनुष्य पंख लगाकर आसमान में उड़ेगा।

(3) भविष्य में मनुष्य मन की गति से अपने अभीष्ठ स्थान पर व्यवहार करते देखा जायेगा।

(4) भविष्य में मनुष्य सभी महासागरों को मीठे जल में बदल देगा और उनका पानी पियेगा।

(5) भविष्य में सब कपोल कल्पित दर्शन त्याग दिये जायेंगे और मात्र विज्ञान सिद्ध दर्शन अपनाये जायेंगे।

(6) भविष्य में सृष्टि में परिवर्तन इतने तीव्र गति से देखे जायेंगे कि भूत या इतिहास को खोजना मुश्किल हो जायेगा, सब आज की रफ्तार में सफर करेंगे।

(7) भविष्य में पारिवारिक उत्तरदायित्व चलते-फिरते पूरे किये जायेंगे, उनमें ठहराव या अपनत्व का भाव नहीं होगा।

(8) भविष्य में अपनों के प्रति कर्त्तव्य मात्र संवेदना व्यक्त करने से पूरा हो जायेगा।

(9) भविष्य में प्रकृति के पांचों तत्त्व क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर मनुष्य के हाथों की कठपुतली होंगे।

(10) भविष्य में मनुष्य का जन्म और मरण उल्लास या भय की वस्तु नहीं रहेगा, बल्कि लाभ और हानि का अंग होगा।

(11) भविष्य में सृष्टि में जड़ और चेतन का ऐसा महा संग्राम होगा कि ब्रह्माण्ड कांप उठेगा।

(12) भविष्य में संसार में इतने काम होंगे कि मनुष्य; पशु-पक्षी-जीव और जंतुओं तक को गुलाम बना कर काम पर लगा देगा।

(13) भविष्य में संसार में एक ऐसा भी समय आयेगा, जब सम्पूर्ण विश्व अराजकता का शिकार होगा और प्रलय जैसी स्थिति का सामना करेगा; किन्तु महा प्रलय नहीं होगी।

(14) दुनिया में महा प्रलय न कभी हुई और न कभी होगी, क्योंकि प्रकृति शाश्वत है, और वह भविष्य में नव-नूतन रूप लेने जा रही है।

(15) भविष्य में संतुलन के लिए सृष्टि का मुख्य नायक मनुष्य एक महा शक्ति स्वरूप में उदित होगा। सृष्टि की दैनंदिन आश्चर्यचकित करने वाली घटनाएं इसका संकेत हैं।

उपसंहार

संसार हमारी आत्मा

संसार को हम जितने जानेंगे, उतना ही उसका महत्त्व मानेंगे। संसार हमारे लिए मात्र सुख की खान ही नहीं है, हमारे अस्तित्व की पहचान भी है। उससे रूबरू होना, हमारे हित में है। हम सब उसकी आत्मा को जानें और उसके प्रकाश में आगे बढ़ें।

समाप्त